# उपनिवेशकाल में मिथिला के सामाजिक सांस्कृतिक तथा शैक्षणिक जीवन का एक अवलोकन

ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा

के

इतिहास ( सामाजिक विज्ञान संकाय )

में

पी–एच॰ डी॰ उपाधि हेतु प्रस्तुत

## शोध–प्रारूप


शोध पर्यवेक्षक
(प्रो0 संजय झा )
अध्यक्ष, स्नातकोत्तर इतिहास विभाग
एल0एन0एम0यू0, दरभंगा

Prashant Kumar
28/11/24
शोधार्थी
प्रशान्त कुमार
वर्ग क्रमांक–06
विश्वविद्यालय क्रमांक–E2210103

# शोध परियोजना प्रारूप

**1- शोध शीर्षक :**

**उपनिवेशकाल में मिथिला के सामाजिक सांस्कृतिक तथा शैक्षणिक जीवन का एक अवलोकन**

**2- प्रस्तावना ( शोध के मुद्दे ) :**

मिथिलांचल के सांस्कृतिक विकासधारा की सभी शाखाओं तथा उपशाखाओं में यहाँ का लोकजीवन जो सभी में समाकर अपनी पहचान को नहीं खोता, यह अलग से ही झलकता रहता है। लोकसंगीत लोकगाथा, लोककाव्य, लोकोत्सव और ग्रामीण मेलों में मिथिला स्पष्ट रूप से गुंजती है। यहाँ का आचार और आचरण गीत–संगीत, वेश–भूषा, हास–परिहास आदि विभिन्न स्थलों पर मैथिल पहचान इतनी तेजी से होती है कि किसी भी जन गोष्ठी में मैथिलों की पहचान अलग से हो जाती है। मछली, भात, दही, चूड़ा व्यंजन, वीमन पटुआ, तिलकोर, तिलौरी, धान एवं आमों का रूप गुण के अनुसार इसका नामकरण, विवाह या मंडल यज्ञोपवीत के पात्र एवं ताल भरवाना आदि मैथिल संस्कृति के सहज स्वाभाविक उपकरणों के रूप में देखे बिना बात आगे नहीं बढ़ती। यहाँ के गोसाउनिगीत, शिव पार्वती से सम्बन्धित नचारी, लोरिक एवं राजा सलहेस की लोक गाथाएँ, ढोल, मृदंग, शिव पार्वती से सम्बन्धित नचारी, लोरिक एवं राजा सलहेस की लोक गाथाएँ, ढ़ोल, मृदंग, झाल, मजीरा आदि का वादन, होली, चैता,

Prashant Kumar
28/11/24

सामा चकेवा, चानन ठोप, मछली का मुड़ा या जमीरी नींबु का रस केले के पत्ते और ऐसे ही कितने उपकरण और तत्व मिथिला की संस्कृति को व्याख्यायित करने में हमें मदद करती है। यहाँ संस्कृति की पहली और अंतिम शर्त सुरूचि और सुन्दर चेतना है। संस्कृति का प्रत्येक तत्व यहाँ सौन्दर्यबोध को उद्दीपित करता है।

इस लोक संस्कृति में दो शब्द लोक और संस्कृति है, जिसमें लोक शब्द का अर्थ प्राणी, जन, मनुष्य, प्रदेश, दिशा, यश, कीर्ति निवास स्थान तथा संसार आदि बताया गया है।' लोक का एक अन्य अर्थ देखना, नजर डालना, प्रत्यक्ष ज्ञान प्राप्त करना, निगाह डालना आदि रहा है। एक विचारक के अनुसार लोक भू भुवः स्व. महाजन, तप और सत्य ये सात तत्व है।

हिन्दी साहित्य कोष भाग–1 पारिभाषिक शब्दावली के अनुसार लोक का एक अर्थ जन सामान्य है, जिसका हिन्दी रूप लोग है। इसी अर्थ का वाचक लोक शब्द साहित्य का विशेषण है। हिन्दी शब्द कल्पद्रुम के अनुसार लोक, लोग, मानव, यश, कीर्ति, सृष्टि के विभाग आदि के अर्थ में प्रयुक्त हुआ है। हलायुध कोष के अनुसार लोक को मनुष्य, प्रजा, समूह, भुवन आदि के रूप में जाना जाता है। पाश्चात्य शब्दकोष में लोक का समानार्थक शब्द 'फोक' है। अंग्रेजी के फोक शब्द का प्रयोग अशिक्षित अर्द्धशिक्षित असभ्य तथा अर्द्धसभ्य वर्ग के लिए किया जात जाता है। इस शब्द की व्युत्पत्ति संस्कृत के लोक दर्शन धातु में धञ प्रत्यय लगाने से बतायी गई है।

आचार्य सुश्रुत के अनुसार लोक स्थावर और जंगम ये दो तरह का होता है। लोकशब्द का शाब्दिक अर्थ देखनेवाला होता है, अतः वह समस्त जन–समुदाय जो इस कार्य को करता है, लोक कहलाता है। डॉ० हजारी प्रसाद द्विवेदी के अनुसार लोकशब्द का अर्थ जनपद या ग्राम्य नहीं बल्कि



Prashant Kumar
28/11/24

नगरों और गाँवों में फैली कई समस्त जनता है, जिसके व्यावसायिक ज्ञान का आधार पोथियाँ नहीं है। ये लोग नगर में परिष्कृत रूचि सम्पन्न तथा सुसंस्कृत समझे जाने वाले लोगों की अपेक्षा की अधिक सरल और कृत्रिम जीवन के अभ्यरत होते हैं। परिष्कृत रूचि वाले लोगों की समूची विलासिता और सुकुमारिता को जीवित रखने के लिए जो भी वस्तुएँ है आवश्यक होती है, उसे उत्पन्न करते हैं, एक चिन्तक के अनुसार आधुनिक सभ्यता से दूर अपने प्राकृतिक परिवेश में निवास करने वाली तथा कथित अशिक्षित एवं असंस्कृत जनता को लोक कहा जाता है, जिनका आधार विचार एवं जीवन परम्परायुक्त नियमों से नियंत्रित होता है। एक विचारक के अनुसार–The People that live is more primitive conditions outside the sphere of sophisticated instances. डॉ० श्याम परमार के अनुसार लोक साधारण जन समाज है जिसमें भू–भाग पर क्रमशः फैले हुए समस्त प्रकार के मानव सम्मिलित है यह शब्द वर्ग भेद रहित व्यापक एवं प्राचीन परम्पराओं की श्रेष्ठ राशि समेत अर्वाचीन सभ्यता संस्कृति के कल्याण में विकास का द्योतक है। कुछ विद्वानों ने लोक शब्द को जनशब्द के अर्थ में प्रयुक्त करते हुए उसका पर्यायवाची माना है। लोक की विवेचना के बाद संस्कृति पर विचार करना आवश्यक प्रतीत होता है। सम् उपसर्ग पूर्व 'कृ' धातु से क्तिन् प्रत्यय करने पर संस्कृति शब्द बनता है, जिसका शाब्दिक अर्थ परिष्कार, तैयारी, पूर्णता तथा मनोविकास है। हिन्दी शब्दकोष के अनुसार इसका अर्थ परिष्कार सुधार संस्कार शुद्धि, सजावट, सभ्यता तथा चौबीस वर्गों के वृत्तों की संज्ञा आदि है। संस्कृति कोष के अनुसार संस्कृति उन गुणों के समुदाय है जो व्यक्तित्व को समूह और परिष्कृत बनाते हैं। चिन्तन और कलात्मक वे क्रियाएं सर्जन संस्कृति के अन्तर्गत आती है, जो मानव जीवन के लिए प्रत्यक्ष में उपयोगी न होने पर भी उसे समृद्ध करती है। इस तरह संस्कृति संपूर्ण सीखे हुए व्यवहार या उस व्यवहार का नाम



Prashant Kumar
28/11/24

है जो सामाजिक परम्परा से प्राप्त होती है। इस प्रकार संस्कृति को सामाजिक प्रथा या कस्टम या रिवाज कहा गया है। विभिन्न शास्त्रों, दर्शनों आदि में होने वाले चिन्तन साहित्य चित्रांकन आदि कलाओं एवं परहित साधन आदि में नैतिक आदर्शों तथा व्यापारों को संस्कृति कहा गया है।

संस्कृति से तात्पर्य समूह के सभी विशेष मानव मूल्यों से है। सिर्फ भाषा, कला, विज्ञान, कानून, नीति, राज्य, धर्म आदि नहीं अपितु इसमें इमारते, औजार यन्त्र, यातायात, योजनाएँ भी सम्मिलित है, जिसमें आध्यात्मिक एक सांस्कृतिक विशेषताओं का व्यावहारिक प्रभावशाली रूप प्राप्त हुआ है। इसके अन्तर्गत भाषा, नियम, परम्परा रीति, रिवाज संस्थाएँ आदि निहित है। यह मानव समाज की सर्वांगीण विशेषताएँ हैं। लोक और संस्कृति के संक्षिप्त विवेचन के बाद मिथिलांचल की लोक संस्कृति पर विचार किया जा सकता है।

मिथिलांचल की लोक संस्कृति सृष्टिकाल से ही अपनी अलग पहचान बनाए हुए है। इसका गहरा संबंध परम्परा से रहा है इसका ही यह विकसित रूप है। भारतीय लोकसंस्कृति की आत्मा जनसाधारण है, जो नगरों से दूर गाँवों एवं वन पर्वतों में बसती हैं। 'आत्मोपम्येन सर्वत्र' यही हमारी लोकसंस्कृति का सिद्धांत है। इसी का पालन कर यहाँ के ऋषि–मुनियों से लेकर जनसाधारण तक ब्रह्मतत्व और माया के मर्म को समझ सके हैं। यहाँ की ग्राम्य संस्कृति का मूलाधार जिन्हें आजकल अनपढ़, गंवार, वनचर आदि संज्ञा से विभूषित किया जाता है वही इस संस्कृति के जीवंत प्रहरी है। जब यहाँ की लोक संस्कृति की आत्मा साधारण जनता का दर्शन करेंगे तो ग्रामों, गिरि कन्दराओं में निवास करती हुई इस संस्कृति की रक्षा कर सकेंगे।

28/11/24



Prashant Kumar
28/11/24

लोक संस्कृति प्रकृति की गोद में पलती और पनपती है। इसमें श्रद्धा भावना की परम्परा निश्चित है, वह अन्तः सलिला सरस्वती की तरह जनजीवन में हमेशा प्रवाहित होती है। वस्तुतः लोक एवं लोकेत्तर संस्कृति तथा विश्व की सभी संस्कृतियों का बीज एक ही है। लोक संस्कृति की व्यापकता का ही मानवीय प्रक्षेत्र है। इसके उदगम और परिव्याप्ति पर विचार करते हुए चिन्तकों का मानना है कि सामान्य जनता में प्रचलित आस्था, विश्वास, परम्पराएँ एवं रीति–रिवाज समाज की वास्तविक संस्कृति का निर्माण करते हैं। इन्हें सीखने के लिए किसी विश्वविद्यालय की शरण नहीं लेनी पड़ती है बल्कि व्यक्ति अपने पूर्वजों के मुख से सुनकर एक विस्तृत समाज में लोगों को वैसा करते देखकर, संस्कृति को ग्रहण करता है।

प्रख्यात अंग्रेज विद्वान सरजॉन हॉस्टन ने बिहार को "भारत का हृदयं" कहा है। इस भारत का हृदय और बिहार की आत्मा वहाँ की ग्राम या लोक संस्कृति है, जिसमें भारतीय संस्कृति के परिष्करण में उल्लेखनीय योगदान किया है। बिहार में भाषा आदि के भेद से वहाँ की प्राप्य संस्कृति की एकता में अनेकता है जो आगन्तुकों को बरबस मन मोह लेता है। मैथिली मगही, भोजपुरी, अंबिका, नगपुरिया, कुरमाकी आदि वहाँ की बोलियों ने अपनी विभिन्नताओं के साथ अपने–अपने परिवेश में अपनी–अपनी मनोरम संस्कृतियों की सर्जना की है, और उसमें अनेक स्तरों पर एक मनोरंजक समानता देखने को मिलता है।

## 3. पूर्व अध्ययन (साहित्यिक सर्वेक्षण) :

मिथिला प्राचीनकाल से ज्ञान के अर्जन का केन्द्र रहा है तथा उपनिवेश काल की अपनी पहचान बनाये रखा। हजारों सालों से मिथिला संस्कृत, न्याय और दर्शन के अध्ययन का विशिष्ट केन्द्र रही है। मिथिला पर किये गये कार्यों में डॉ॰ रत्नेश्वर मिश्र, डॉ॰ राधाकृष्ण चौधरी, डॉ॰ उपेन्द्र ठाकुर



Prashant Kumar
28/11/24

के कार्य उल्लेखनीय हैं। विजयकांत मिश्र ने अपनी पुस्तक कल्चरल हैरिटेज ऑफ मिथिला में मिथिला की संस्कृति का विशद् वर्णन किया है। राधाकृष्ण चौधरी ने मिथिला इन द एज ऑफ विद्यापति में विद्यापति के समय में मिथिला का सामाजिक सांस्कृतिक स्थिति का वर्णन किया है। उपेन्द्र ठाकुर ने अपनी पुस्तक स्ट्डीज इन जैनिज्म एंड बुद्धिज्म इन मिथिला में जैन धर्म तथा बौद्ध धर्म के प्राव का वर्णन किया है। डॉ॰ विश्वम्भर झा ने एजुकेशन इन अर्ली मिथिला में प्रारंभिक काल में मिथिला में शिक्षा व्यवस्था पर प्रकाश डाला है।

**4. उद्देश्य महत्व एवं प्रासंगिकता :**

मिथिला का इतिहास सही मायने में दिग्विजय अथवा महान् साम्राज्य की स्थापना का इतिहास नहीं अपितु ज्ञान एवं विद्या का अक्षुण्या सांस्कृतिक इतिहास है। इस बात की पुष्टि मिथिला से प्राप्त पुरावशेषों से होती है। यद्यपि पौराणिक काल से इस क्षेत्र के इतिहास की एक श्रृंखलाबद्ध जानकारी प्राप्त होती है। पर उत्तर वैदिक साहित्य ने इसकी प्राचीनता, राजनीतिक, धार्मिक स्वरूप एवं भौगोलिक विस्तार पर विस्तृत वर्णन प्रस्तुत किया गया है। अलग–अलग काल में इसे चाहे विदेह, तीरभुक्ति, तिरहुत या तपोभूमि नाम से सम्बोधित किया जाता रहा है। उपनिवेश काल में भी मिथिला के राज्य के वैभव और प्रतिष्ठा के विषय में भारतीय साहित्यकारों एवं मनीषियों तथा विदेशी यात्रियों ने पूरी ईमानदारी से अपने विचार रखे हैं। इसका महत्व एवं प्रासंगिकता वर्तमान समय में मिथिला क्षेत्र की सामाजिक, सांस्कृतिक तथा शैक्षणिक स्थिति से तुलनात्मक अध्ययन तथा इसके विभिन्न पक्षों का अध्ययन किया जायेगा।

**5. ज्ञान के क्षेत्र में योगदान :**

[signature] 28/11/24



Prashant Kumar
28/11/24

इस शोध के माध्यम से उपनिवेश काल में मिथिला के सामाजिक, सांस्कृतिक तथा शैक्षणिक जीवन के अध्ययन में इसके विविध पक्षों जैसे मिथिला के दार्शनिक, विद्वानों, समाज, संस्कृति आदि ने किस प्रकार मिथिला क्षेत्र का नाम शिखर पर पहुँचाया। ज्ञान के क्षेत्र में मिथिला चरमोत्कर्ष पर था। ज्ञान और संस्कृति मिथिला की धरोहर है।

6. **अध्ययन क्षेत्र :**

प्रस्तुत शोध का अध्ययन क्षेत्र मिथिला होगा। इसमें हम मिथिला के सामाजिक, सांस्कृतिक तथा शैक्षणिक स्थिति का अध्ययन करेंगे। यद्यपि इस पर पूर्व में भी काफी कार्य किये गये हैं। लेकिन अभी इन मुद्दों पर नये दृष्टिकोण अपनाकर अध्ययन करने की आवश्यकता है। इस संदर्भ में उपनिवेश काल में मिथिला के सामाजिक, सांस्कृतिक तथा शैक्षणिक जीवन का अवलोकन करना यही इसका अध्ययन क्षेत्र है।

7. **अध्ययन पद्धति :**

उपनिवेश काल में मिथिला के सामाजिक, सांस्कृतिक तथा शैक्षणिक जीवन का अध्ययन विभिन्न दृष्टिकोणों से करने का प्रयास इस शोध के माध्यम से किया जा रहा है। यह निश्चित रूप से मिथिला क्षेत्र के विकास के लिए अति महत्वपूर्ण तथा अनसुलझे पक्षों को उजागर करने का काम है।

8. **शोध सामग्री की उपलब्धता :**

प्रस्तुंत विषय पर शोध सामग्री पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध है किन्तु बिखरा हुआ है। इन्हें संकलित कर शोध हेतु सामग्री बनाने में ग्रंथों, पत्र–पत्रिकाओं, शोध प्रबंधों को माध्यम बनाया गया है। महारानी कल्याणी फाउंडेशन, दरभंगा, ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा पुस्तकालय, पूर्णिया जिला पुस्तकालय, सच्चिदानंद सिन्हा पुस्तकालय, पटना आदि में पर्याप्त मात्रा में रिकार्ड्स उपलब्ध हैं जिसका उपयोग शोध में होना सुनिश्चित है।



Prashant Kumar
28/11/24

**9. परिकल्पना (यदि कोई हो) :**

यह शोध एक छोटी परन्तु महत्वपूर्ण उपलब्धि होगी। इसके द्वारा उपनिवेश कालीन मिथिला में सामाजिक, सांस्कृतिक तथा शैक्षणिक पहलू के अनसुलझे पक्षों को इस शोध के माध्यम से जानने में मदद मिलेगी।

**10. कार्य योजना :**

प्रस्तावित शोध कार्य को निम्नलिखित अध्यायों के अन्तर्गत सम्पन्न किया जायेगा—

| | | |
|---|---|---|
| प्रथम अध्याय | — | भूमिका |
| द्वितीय अध्याय | — | उपनिवेश कालीन मिथिला का सामाजिक जीवन |
| तृतीय अध्याय | — | उपनिवेश कालीन मिथिला का सांस्कृतिक जीवन |
| चतुर्थ अध्याय | — | उपनिवेश कालीन मिथिला का शैक्षणिक जीवन |
| पंचम अध्याय | — | उपनिवेश कालीन मिथिला की ज्ञान परंपरा |
| षष्ठ अध्याय | — | निष्कर्ष |

संदर्भ ग्रंथ सूची

**11. संदर्भ ग्रंथ सूची :**

**प्राथमिक स्रोत :**

1. समस्तीपुर जिला गजेटियर
2. दरभंगा जिला गजेटियर
3. मधुबनी जिला गजेटियर
4. पूर्णिया जिला गजेटियर
5. सहरसा जिला गजेटियर
6. शतपथ ब्राह्मण
7. याज्ञवलक्य स्मृति

**द्वितीयक स्रोत :**



Prashant Kumar
28/11/24

1. चौधरी, राधाकृष्ण : मिथिला इन दि एज ऑफ विद्यापति, चौखम्भा प्रकाशन, वाराणसी।
2. झा, अजीत : मिथिला का औद्योगिक विकास, शोध संचय, दिल्ली।
3. झा, परमश्वेर : डेवलपमेंट ऑफ हिन्दू एस्ट्रो मैथमेटिकल साईंसेज इन मिथिला, चौखंभा प्रकाशन वाराणसी।
4. ठाकुर, उपेन्द्र : स्टडीज इन जैनिज्म एंड बुद्धिज्म इन मिथिला, चौखंभा भारती, वाराणसी।
5. मिश्र, विजयकांत : कल्चरल हैरिटेज ऑफ मिथिला, मिथिला प्रकाशन, इलाहाबाद।
6. सिन्हा, सी. पी. एन. : मिथिला अंडर दि कर्नाट, जानकी प्रकाशन, पटना।
7. सिंह, विद्यापति : मिथिला का उद्योग और व्यापार, सुधाकर प्रेस, दरभंगा।
8. झा, संजय : मिथिला के विकास में भोगेन्द्र झा का योगदान, साहित्य भारती पब्लिकेशन हाउस, पटना।
9. चौधरी, रमाकान्त : समस्तीपुर जिला दर्शन।
10. झा, हरिमोहन : भारतीय दर्शन परिचय।
11. पाण्डेय, विश्व मोहन : बिहार–स्थानीय इतिहास एवं परंपरा, जानकी प्रकाशन, पटना।

**पत्र–पत्रिकायें :**

1. मिथिला भारती
2. तिरहुत
3. सबर्ल्टन स्ट्डीज
4. वैचारिकी
5. इतिहास

Prashant Kumar 28/11/24

**शोधार्थी का हस्ताक्षर**
**(प्रशान्त कुमार)**

28/11/24

**शोध पर्यवेक्षक**
**(प्रो0 संजय झा)**
**अध्यक्ष, स्नातकोत्तर इतिहास विभाग**
**एल०एन०एम०यू०, दरभंगा**